नियम : समभाव सिद्धि

मोतीलाल जैन

ट्रस्ट परिचय

सादा जीवन उच्च विचारों के आदर्श स्व. श्री खेमचन्द जैन द्वारा 30 अगस्त 1979 को श्री खेमचन्द जैन चेरिटेबिल ट्रस्ट की स्थापना की गई। उन्होंने बचपन से अपनी प्रौढ़ अवस्था तक गरीबी के साथ आजीवन संघर्ष करते हुए अपना छोटा सा बीड़ी का उद्योग स्थापित किया। कालांतर में उनके पुत्रों के सहयोग से व पूर्व अर्जित पुण्य के प्रभाव से उनका कठिन पुरुषार्थ फलीभूत हुआ और उनके द्वारा स्थापित इस बीड़ी उद्योग के नन्हें से पौधे ने एक वट वृक्ष का रूप धारण कर लिया। परम आदरणीय कक्का जी ने गरीब बीड़ी मजदूरों के हितार्थ इस चेरिटेबिल ट्रस्ट की स्थापना मात्र पांच हजार रुपयों से अपने जीवनकाल में की।

1. ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष नेत्र शिविर लगाये व विकलांग शिविर भी लगाये जाते हैं।
2. शिक्षण संस्थाओं को अनुदान एवं होनहार गरीब विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता दी जाती है।
3. 1982 में आयुर्वेदिक औषधालय प्रारम्भ किया गया।
4. 1985 में खेमचंद जैन हास्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर की स्थापना हुई। इसमें ओ.टी. व 30 बिस्तर वाला सभी सुविधाओं से युक्त हास्पिटल चलाया जा रहा है। गरीबों को विशेष रियायत दी जाती है।
5. सामाजिक शिक्षा हेतु उपयोगी ग्रंथों व पुस्तकों का प्रकाशन समय-समय पर किया जाता रहता है।

ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तकें -

भक्तामर भारती
वर्णी अमृत कण
चिन्तन की गलियों से
दृष्टिकोण
दृश्य और दृष्टिकोण

नियम : समभाव सिद्धि

[illegible]

नियम : समभाव सिद्धि

प्रथम संस्करण 2006
मूल्य - स्वाध्याय

प्रकाशक
खेमचंद जैन
चेरिटेबिल ट्रस्ट
सागर (म. प्र.)

अक्षर संयोजन
एक्टिव कम्प्यूटर्स
नमक मंडी, कटरा, सागर (म. प्र.)
✆ 07582 - 403225 Mob. 9826434225

आचार्य कुंदकुंददेव द्वारा रचित
ग्रंथ नियमसार
के प्रथम तीन अधिकारों
का
सरल हिन्दी अनुवाद

– मोतीलाल जैन

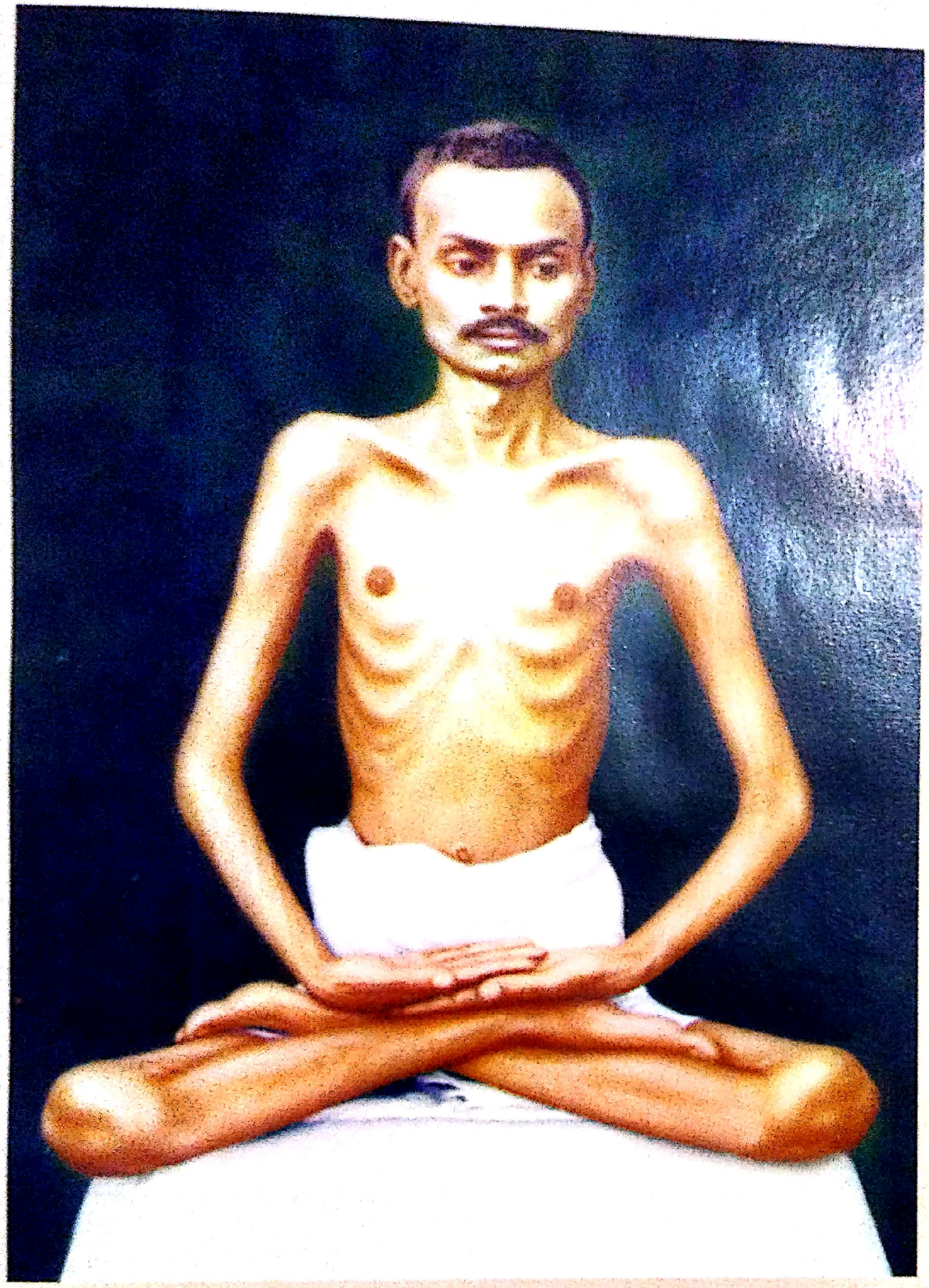

श्रीमद् राजचंद्र जी अगास (गुजरात)

जन्म - विक्रम संवत् 1924, कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा

देह विलय - विक्रम संवत् 1957, चैत्र कृष्ण पंचमी

प्रकाशक
श्री खेमचन्द जैन चेरिटेबिल ट्रस्ट
178, केशवगंज, सागर (म. प्र.)
दूरभाष (07582) 233682 (O)
248435 (R)

डिजायन एवं मुद्रक
एक्टिव कम्प्यूटर्स
नमक मंडी, कटरा, सागर (म. प्र.)
दूरभाष (07582) 403225 (O)
मोबा. 9826434225

29 जून 1932 को सागर में जन्मे श्री मोतीलाल जैन देश के जाने माने उद्योगपति हैं। इन्होंने अपने पितृ पुरुषों से विरासत में मिली औद्योगिक चेतना को बड़े श्रम और कर्मशीलता के साथ सागर जैसे छोटे स्थान से विकसित करके राष्ट्रीय फलक पर प्रतिष्ठित किया है। उनकी व्यक्ति चेतना केवल उद्योग में ही प्रतिफलित नहीं हुई है बल्कि इसी के सामान्तर चिंतन, मनन और अध्ययन में संलग्न रही है जिससे उनकी लेखनी को एक नया आयाम मिला। धर्म, दर्शन तथा राजनीति और संस्कृति के क्षेत्र में अपनी अवलोकन दृष्टि से विचरण करते हुए महत्वपूर्ण निष्कर्ष दिए हैं।

एक औद्योगिक परिवार के मुखिया होने के नाते उनकी पारिवारिक सम्वेदना विस्तीर्ण होकर गहन मानवीय अनुभूति में परिणत हुई है। इस नाते वे अपनों के बीच उदार, सहिष्णु, संवेद्य, अभिमान रहित स्वाभिमानी के रूप में जाने जाते हैं। बंधु-बांधुवों और आत्मीय जनों के स्नेह, आदर, सम्मान के प्रतीक मोतीलाल जी को बड़ा श्रद्धेय संबोधन प्राप्त हुआ है, 'दाऊ जी' का! बुन्देली धरती की सोंधी माटी गंध में रचा बसा यह शब्द एक गहन मानवीयता बोध का पर्याय श्रद्धा के साथ शौर्य का प्रतीक भी है।

मृदुभाषी और सौहार्द्र से परिपूर्ण 'दाऊ जी' की उपलब्धियां अनेक हैं, किन्तु उससे बढ़कर उनका अर्जन है। उनके द्वारा लिखित पुस्तकें :-

1. चिन्तन की गलियों से
2. दृष्टिकोण भाग एक।
3. दृष्टिकोण भाग दो।
4. दृश्य और दृष्टिकोण।

अब यह पाँचवी अनुवादित पुस्तक नियम : समभाव सिद्धि आपके हाथों में है।

डॉ. आर. डी. मिश्र